कोहलवर्ग के नैतिक सिद्धांत की चर्चा करें ?

Moral Development Theory of Kohlberg.

नैतिक विकास एक ऐसी प्रक्रीया है, जिससे बच्चा समाज से सम्मानीत मूल्यों को ग्रहण करता है। और इन्ही मूल्यों के आधार पर सही और गलत का पहचान कर पाता है।

फ्रायड़ के अनुसार → जब बच्चा माता पिता की भावनाओं और अभिवृर्तियों को उनसे ग्रहण करता है। । उनसे ग्रहण की हुई नैतिकता ही आगे चलकर उसके है। लिए विवेक का रूप धारण कर लेती है।।

नैतिक विकास की अवस्थाएँ:-

कोहल वर्ग ने विभिन्न प्रकार के प्रयोग के द्वारा बताया कि बालक में नैतिक विकास की तीन अवस्थाएं पाई जाती है!प्रत्येक स्तर में दो-दो अवस्थाएं होती है! प्रत्येक अवस्था का जो कम होता है वह निश्चित होता है, परंतु प्रत्येक व्यक्ति में समान उम्र में यह अवस्थाएं हो यह निश्चित नहीं होता है! लेकिन प्रत्येक व्यक्ति एक अवस्था को छोड़कर दूसरी अवस्था में प्रवेश नहीं कर सकता है!

1.पूर्व परंपरागत स्तर (Pre conventional stage):- इसको पूर्व बाल्यवस्था का नाम दिया गया है, बालक मे चार से 10 साल की आयु तक होती है। किसी 11. विषय वस्तु के बारे में सही या गलत का निर्णय खुद न लेकर के दूसरे के द्वारा बनाये गए मानक के आचार पर करता है, बालक इसमे किसी विषय वस्तु को अच्छा या बुरा उसके भौतीक परिणामों के आधार पर मानता है। इसमें दो अवस्थाएँ पाई जाती है। प्रथम अवस्था में बालक सम्मानित व्यक्ति, माता- पिता और शक्तिशाली व्यक्ति के प्रति सम्मान दिखाता है। ताकी उसे दण्ड न प्राप्त हो सकें। दुसरी अवस्था में बालक में पुरस्कार की अभिप्रेरणा प्रवल होती है। जिसमें बालक कार्यों में सह- भागीता दिखाता है।

इसके अन्तर्गत दो चरण होते है।

(i) दण्ड तथा अज्ञापालन उन्मुक्ता:-इस अवस्था में अज्ञा का पालन दण्ड के भय पर आधारीत होता है। इस अवस्था में बालकों में नैतीकता का - वास्तवीक ज्ञान नहीं होता हैं। बालक स्वयं को परेशानियों - से बचाना चाहता है इस-लिए दण्ड की शक्ति रखने वाले व्यक्ति के प्रति अन्धी श्रद्धा रखता है। उन्हें दुसरो के अधिकारो का कोई ज्ञान नही होता है। जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली स्थिती होती है।

(ii) साधनात्मक उन्मुक्ता :- इस अवस्था में बच्चा अपनी आवश्यकताओं के प्रति सचेत रहता है! दूसरों के अधिकारों को भी समझने लगता है! इसी धारणा में वह दूसरों की आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रयास करता है! वह अपनी रुचि को प्राथमिकता देता है और पुरस्कार पाने के लिए नियमों का पालन करता है ¡

(2) परंपरागत स्तर Conventional stage):-इसे उत्तर बाल्यवस्था कहा गया है। बालक में यह अवस्था 10 से 13 साल की उम्र में पाया जाता है, जो समाज के नियम के अनुकूल होती है। और दूसरे की मदद के लिए उत्सुक होता है, इस अवस्था में बालक दुसरे व्यक्ति के नैतिक व्यवहारों को अपने व्यवहार में समाहीत करता है, तथा उस मानक के सही एवं गलत पक्ष का भी चिंतन के माध्यम से निर्णय करता है। तथा उस पर अपनी सहमती बनाता है, इस स्तर पर बालक अपनी आवश्यकता के साथ - साथ दुसरो की आवश्यकता का भी ध्यान रखता है।

इसके भी दो भाग होते है।

(i) अच्छा लड़का या अच्छी लड़की:- इस अवस्था में बच्चे में एक-दुसरे का सम्मान करने की भावना होती है, तथा दूसरो से भी सम्मान पाने की इच्छा जाहीर का जाती है।

(ii) समाजिक व्यवस्था के सम्मान की अवस्था:- इस अवस्था में प्रवेश से पहले बालक समाज को केवल इसलिए महत्वपूर्ण मानता है, कि समाज उसकी प्रशंसा करता है। अब वह समाज को स्वयं एक लक्ष्य मानने लगता है। इस अवस्था में पहुँचकर स्वयं यह समझने लगता है, कि समाजीक नियमों के विरुद्ध प्रत्येक कार्य अनैतिक है।

3.उत्तर परंपरागत स्तर (Post conventional Stage):- यह किशोरावस्था के आसपास का समय होता है!यह नैतिकता का उच्च स्तर होता है, इस स्तर पर आचरण पर नियंत्रण आंतरिक हो जाता है!कोहल वर्ग ने बताया कि जैसे-जैसे बालक परिपक्व होता है वैसे-वैसे उसके नैतिकता का अंतर बढ़ता चला जाता है!व्यक्ति नैतिकता के किसी भी चरण को छोड़कर आगे नहीं बढ़ सकता प्रत्येक कम को इस पर करना होता है!

इसके भी दो भाग होते है।

(i)सामाजिक समझौते की अवस्था:- इस अवस्था में बालक समाज से संपर्क या समझौते को मजबूत बनाने के लिए सामाजिक नियमों का पालन करता है! उसे डर रहता है कि समाज के साथ उसका संबंध न टूटे परंतु इस अवस्था में वह समझने लगता है, कि यदी समाज की सहमती हो तो समाजिक नियमों को भी बदला जा सकता है। बालक समझ जाता है कि समाजिक के नियम निश्चित नही होते है।

उदाहरण:- यदि एक व्यक्ति अपने बच्चे की जान बचाने के लिए दवा की चोरी करता है, तो यहाँ देखा जाएगाँ कि जिवन बचाना यहाँ महत्वपूर्ण है।

(ii)विवेक की अवस्था (universal ethic) – इसे विवेक की 'अवस्था भी कहा जाता है, इस अवस्था तक व्यक्ति के अच्छे, बुरे, उचित, अनुचित आदि विषयों पर स्वयं के व्यक्तिगत विचार विकसीत हो जाते है, एवं अपने बनाये गए नियमों